गंगा में प्रदूषण
एक रिपोर्ट

डॉ. दीपक कोहली

पतित पाविनी गंगा नदी के अस्तित्व को बचाने एवं प्रदूषण को समाप्त करने हेतु आम आदमी की जागरूकता एवं प्रयास अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। सरकार चाहे जो योजना बना ले जब तक आम जन-मानस की सहभागिता नहीं होगी तब तक इन योजनाओं की सफलता पर प्रश्नचिन्ह लगा रहेगा।

भारतीय जन-मानस, बल्कि स्वयं भारतीयता, की आस्था का जीवंत प्रतीक है, गंगा। असाधारण धार्मिक महत्व के साथ भारत में सबसे बड़ी नदी है गंगा। यह नदी भारत के 11 राज्यों में भारत की आबादी के 40 प्रतिशत लोगों को पानी उपलब्ध कराती है। दूसरे शब्दों में कहें तो भारत की जीवन-रेखा (Life Line) है - गंगा। गंगोत्री से अवतरित पावन गंगा आज दिन-प्रतिदिन मैली होती जा रही है। आज यह दुनिया की छठी सबसे प्रदूषित नदी मानी जाती है।

लोगों को मोक्ष दिलाने वाली गंगा का पानी प्रदूषण के कारण काला पड़ रहा है। गंगा में प्रदूषण का एक प्रमुख कारण इसके तट पर निवास करने वाले लोगों द्वारा नहाने, कपड़े धोने, सार्वजनिक शौच की तरह उपयोग करने की वजह है। अनगिनत टैनरीज, रसायन सयंत्र, कपड़ा मिलों, डिस्टिलरी, बूचड़खानों और अस्पतालों का अपशिष्ट गंगा के प्रदूषण के स्तर को और बढ़ा रहा है। औद्योगिक अपशिष्टों का गंगा के प्रदूषण में बढ़ता योगदान प्रमुख चिंता का कारण है। औद्योगिक कचरे के साथ-साथ प्लास्टिक कचरे की बहुतायत ने गंगा जल को बेहद प्रदूषित किया है। जांच के अनुसार पाया गया कि गंगा में 2 करोड़ 90 लाख लीटर प्रदूषित कचरा प्रतिदिन गिर रहा है। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश की 12 प्रतिशत बीमारियों की वजह प्रदूषित गंगा का जल है। यह घोर चिन्तनीय है कि गंगा-जल न पीने के योग्य रहा, न स्नान के योग्य और न ही सिंचाई के योग्य रहा है। गंगा की पराभव का अर्थ होगा, हमारी समूची सभ्यता का अंत। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार गंगा के जल में आर्सेनिक, फ्लोराइड एवं क्रोमियम जैसे जहरीले तत्व बड़ी मात्रा में मिलने लगे हैं।

केन्द्रीय जल आयोग की ताजा रिपोर्ट के अनुसार गंगा का पानी तो प्रदूषित हो ही रहा है साथ ही बहाव भी कम होता जा रहा है। यदि यही स्थिति रही तो गंगा में पानी की मात्रा बहुत कम व प्रदूषित हो जाएगी। देश के प्रमुख धार्मिक शहर वाराणसी की पहचान गंगा के निर्मल जल पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। गंगा का जल स्तर इस तेजी से गिर रहा है कि विगत एक वर्ष के भीतर गंगा में ढाई फिट पानी घट

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार गंगा के जल में आर्सेनिक, फ्लोराइड एवं क्रोमियम जैसे जहरीले तत्व बड़ी मात्रा में मिलने लगे हैं। गंगा का पानी तो प्रदूषित हो ही रहा है साथ ही बहाव भी कम होता जा रहा है। यदि यही स्थिति रही तो गंगा में पानी की मात्रा बहुत कम व प्रदूषित हो जाएगी।

गया है। जिन घाटों पर बैठकर कभी लोग गंगा के निर्मल जल में स्नान कर पापों का नाश किया करते थे उन घाटों से गंगा का जल दूर हो गया है। गंगा के घटते जल स्तर से सभी परेशान हैं। गंगा नदी में ऑक्सीजन की मात्रा भी सामान्य से कम हो गयी है। वैज्ञानिक मानते हैं कि गंगा के जल में बैक्टीरियोफेज नामक विषाणु होते हैं, जो जीवाणुओं व अन्य हानिकारक सूक्ष्म जीवों को समाप्त कर देते हैं। किन्तु प्रदूषण के चलते इन लाभदायक विषाणुओं की संख्या में भी काफी कमी आयी है। इसके अतिरिक्त गंगा को निर्मल व स्वच्छ बनाने में सक्रिय भूमिका अदा कर रहे कछुए, मछलियां एवं अन्य जल-जीव समाप्ति की कगार पर हैं।

गंगा नदी को स्वच्छ बनाने के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकारों ने कई योजनाएं बनाई हैं। इन योजनाओं के तहत करोड़ों रूपए प्रदान किए गए हैं। गौरतलब है कि अकेले वाराणसी में ही गंगा को स्वच्छ करने के लिए काफी खर्चा किया गया, लेकिन इतने खर्चे के बावजूद भी गंगा के पानी में प्रदूषण की मात्रा कम नहीं हुई। पर्यावरणविदों एवं वैज्ञानिकों के अनुसार जब तक गंदे नालों का पानी, औद्योगिक अपशिष्ट, प्लास्टिक कचरा, सीवेज, घरेलू कूड़ा-करकट पदार्थ आदि गंगा में गिरते रहेंगे तब तक गंगा का साफ रहना मुश्किल है।

गंगा में बढ़ते प्रदूषण पर नियंत्रण पाने के लिए विशेष प्रकार के कछुओं व घड़ियालों की मदद ली जा रही है। सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट तथा औद्योगिक अपशिष्टों को साफ करने के लिए संयत्रों को लगाया जा रहा है और उद्योगों के कचरों को इसमें गिरने से रोकने के लिए कानून बने हैं। इसी क्रम में गंगा नदी को ''राष्ट्रीय धरोहर'' भी घोषित कर दिया गया है और ''गंगा एक्शन प्लान व राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना'' लागू की गई है। सरकार द्वारा इन योजनाओं पर अरबों रूपए खर्च किए जा चुके हैं लेकिन हकीकत में क्या गंगा के प्रदूषण में कमी आयी है? इसमें संदेह है। इसके अलावा ''राष्ट्रीय नदी गंगा बेसिन प्राधिकरण'' (एन.आर.जी.बी.ए.) पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 की धारा-3 के अन्तर्गत 20 फरवरी, 2009 को केन्द्र सरकार द्वारा स्थापित किया गया। इसके तहत भी भारत की ''राष्ट्रीय नदी'' गंगा को प्रदूषण मुक्त किए जाने हेतु योजनाएं बनायी गयी। सुप्रीम कोर्ट द्वारा भी गंगा नदी के किनारे औद्योगिक सयंत्रों को बंद करने और स्थानांतरित करने हेतु सरकार को समय-समय पर निर्देशित करने का कार्य किया गया है। किन्तु सच्चाई यह है कि इस सबके बावजूद गंगा नदी के प्रदूषण में कमी दृष्टिगोचर नहीं होती है। योजनाएं तो अच्छी हैं परन्तु जब तक इन योजनाओं का वास्तविक रूप से सही मायनों में क्रियान्वयन नहीं किया जाता तब तक इनका कोई प्रभाव

दिखाई देना मुश्किल है। जनता भी इस विषय पर जाग्रत हुई है। इसके साथ ही धार्मिक भावनाएं आहत न हों इसके भी प्रयत्न किए जा रहे हैं। इतना सब कुछ होने के बावजूद गंगा के अस्तित्व पर संकट के बादल छाए हुए हैं। पतित पाविनी गंगा नदी के अस्तित्व को बचाने एवं प्रदूषण को समाप्त करने हेतु आम आदमी की जागरूकता एवं प्रयास अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। सरकार चाहे जो योजना बना ले जब तक आम जन-मानस की सहभागिता नहीं होगी तब तक इन योजनाओं की सफलता पर प्रश्नचिन्ह लगा रहेगा।

"सेन्ट्रल पॉल्यूशन कन्ट्रोल बोर्ड" की वर्ष 2012 की रिपोर्ट के अनुसार सरकार अभी तक गंगा की सफाई हेतु विभिन्न परियोजनाओं हेतु लगभग 20,000 करोड़ रूपया खर्च कर चुकी है। लेकिन गंगा नदी के जल की स्थिति अत्यन्त सोचनीय है। साबरमती परियोजना, गुजरात की तर्ज पर गंगा की सफाई अभियान को चलाने की जो पहल मा. प्रधानमंत्री जी द्वारा की जा रही है, उससे एक आशा की किरण जगी है। संभव है कि मजबूत प्रतिबद्धता एवं योजनाओं के सही दिशा में क्रियान्वयन के चलते गंगा नदी अपने पूर्व वैभव एवं स्वच्छता को प्राप्त कर सकेगी

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार गंगा के जल में आर्सेनिक, फ्लोराइड एवं क्रोमियम जैसे जहरीले तत्व बड़ी मात्रा में मिलने लगी हैं।

संपर्क करें :
डॉ. दीपक कोहली
5/104, विपुल खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ -226010
(उत्तर प्रदेश)

"जल महत्व"

"चर्चाएँ तो बहुत हो रही,- जल प्रदूषण हानि की"

नहीं हो रहा दूर प्रदूषण, बात बड़ी हैरानी की ।
चर्चाएँ तो बहुत हो रही, जल प्रदूषण हानि की ।।

ऐसा न जल स्त्रोत कहीं भी-जिसे प्रदूषण मुक्त कहे ।
अपशिष्टों से हुए-प्रदूषित, क्यों न गंदगी मुक्त कहें ।।
पावन नदियाँ हुई प्रदूषित-मल मूत्र के मिलने से ।
उद्योगों के गंदे-पानी-तत्व रसायनिक मिलने से ।।

बंद करेगा कौन ! बताओ, फिकर किसे जन हानि की।
चर्चाएँ तो बहुत हो रही, जल प्रदूषण हानि की।।

जीवन का पयभि नीर अब, तनिक न निर्मल नीर रहा ।
विष का ही पयभि-समझलो, पनपा-गंभीर रोग रहा ।।
दूषित व्यापक जल तंत्र से-बिगड़ा चहुँ ढचरा है ।
घातक तत्व रसायन जल में, मिला कहीं पे कचरा है ।।

रोक न सकते, टोक न सकते, आजादी मनमानी की ।
चर्चाएँ तो बहुत हो रही, जल प्रदूषण हानि की ।।

पंचतत्व में प्रमुख तत्व जल, निर्मलता से दूर हुआ ।
कई तरह के तत्व, रसायन, घुला-घुला भरपूर हुआ ।।
गंदी नाली नाला बन कर, मिले नदी में जाती है ।
अविरल धाराएँ नदियों की, लिए गंदगी आती हैं ।।

कानूनी बंदिश न कहीं पे-बात वहीं मनमानी की ।
चर्चाएँ तो बहुत हो रही, जल प्रदूषण हानि की ।।

जीवन का आधार जगत में, सच जल ही तो होता है ।
जिसमें "मल" मिल जाए-जल वो-कभी शुद्ध नहीं होता है ।।
छियालीस लाख किस्म के जल में, जल जीव-होते ही हैं ।
ऊपर से अपशिष्ट मिले तो, जल कण विष होते ही हैं ।।

जल संयंत्र संदिग्ध शुद्ध-जल-बात-नादानी की ।
चर्चाएं तो बहुत हो रही, जल प्रदूषण हानि की ।।

हृदय शुद्ध हो-जल शुद्ध हो, तब तो समझे बात बने ।
हो जल शुद्धि सतत चेतना, समझे उर में बात जमें ।।
अपशिष्ट, रसायन, अन्य वस्तु, हों न विसर्जित जल में ।
काश! बने कानून-बंदिशें, तब हो शुद्धता जल में ।।

एक नहीं अब कई भगीरथ, पीड़ा समझें पानी की ।
चर्चाएं तो बहुत हो रही, जल प्रदूषण हानि की ।।

संपर्क करें :
रामगोपाल राही
पताः- मोहल्ला गणेशपुरा वार्ड 4/5
पो॰ओ॰ - लाखेरी - 323615
जिला - बून्दी (राज.)
मो॰न॰ 09982491518
मो॰न॰ 09783459225